# बाजरे की रोटी

सतीश कुमार कश्यप
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

लंच शुरू हो गया था । जितेन्द्र शर्मा, राजु श्रीवास्तव, अनिल गांगुली साथ-साथ खाना खा रहे थे । ये सभी लोग मेरे सहायक हैं । यार पालक पनीर तो बड़ा टेस्टी बना है, राजु श्रीवास्तव खाने में बहुत माहिर है।

पनीर असल में, पालक के साथ थोड़ा और होना चाहिए था, तब मजा आता, अनिल गांगुली को हर चीज थोड़ी और चाहिए होती है । पालक के साथ मक्का की रोटी बहुत अच्छी लगती है, जब गॉव में था .... लेकिन अब क्या इस शहर में आकर सब कुछ ..... जितेन्द्र शर्मा जरूर दिल्ली में रह रहा है लेकिन उसका मन हमेशा उसके गॉव में, अतीत में ही डूबा रहता है । मैं सभी की बातें सुन रहा था कि अम्मा-पिताजी याद आ गये कैसे अम्मा लोगों के खेतों से मॅगाकर लाए गए पालक, मेथी, बथुआ और सरसों को मिलाकर साग बनाया करती थी और शाम को पिताजी पूरे दिन मजदूरी करके बाजरा खरीदकर अपनी कमीज के दामन में लाते थे और अम्मा उसे छांट-फटकारकर पीसती थी तब बाजरे की रोटी के साथ साग खाया जाता था । सोचते ही सोचते मुँह से पानी निकल गया था, अच्छा, आप सभी एक बात बताओ आप में से किसी ने बाजरे की रोटी के साथ मिक्स साग खाया है ।

बाजरे की रोटी, राजू श्रीवास्तव बोले थे, हॉं, हॉं, बाजरे की रोटी सर हम जानते हैं बाजरा .... हमारे यहॉं जानवरों के लिए बोया जाता था ... सर बाजरा तो जानवर खाते थे । एक ही सांस में बोल गया था राजू श्रीवास्तव । इतना सुनते ही मेरी आंखो में ऑसू निकले और मेरी सब्जी में मिक्स हो गये । उस दिन कोई नहीं जान पाया था कि मन से निकली पीड़ा ऑसुओं से होती हुई बिखर गई थी ।